

Topic - Dynamic or Structural aspect of mind

मन का गत्यात्मक या संरचनात्मक पहलू

फ्रायड के अनुसार मन के गत्यात्मक पहलू से तात्पर्य उन प्रतिनिधियों या साधनों से होता है जिन्हें द्वारा मूलप्रवृत्तियों से उत्पन्न मानसिक संघर्षों का समाधान होता है। फ्रायड के अनुसार, "व्यक्तित्व के गत्यात्मक पहलू से फ्रायड का तात्पर्य उन प्रतिनिधियों से होता है जिन्हें मूलप्रवृत्तियों से उत्पन्न रहने वाले संघर्षों का समाधान किया जाता है।" मूलप्रवृत्तियों से फ्रायड का तात्पर्य वैसे जन्मजात शारीरिक ऊर्जन से होता है जिन्हें द्वारा व्यक्ति के सभी तरह के व्यवहार निर्धारित किये जाते हैं। फ्रायड ने मूलप्रवृत्तियों को मूलतः दो भागों में बाँटा है - जीवन मूलप्रवृत्ति तथा मृत्यु मूलप्रवृत्ति।

जीवन मूलप्रवृत्तियों द्वारा व्यक्ति के सभी तरह के रचनात्मक कार्यों का तथा मृत्यु मूलप्रवृत्ति द्वारा व्यक्ति के सभी तरह के ध्वंसात्मक कार्यों तथा आक्रामककारी व्यवहारों का निर्धारण होता है। सामान्य व्यक्तित्व में इन दोनों तरह के प्रवृत्तियों में एक संतुलन बना होता है। जब इन परस्पर विरोधी मूल प्रवृत्तियों में संघर्ष होता है तो व्यक्ति उनका समाधान करने की कोशिश करता है। इस तरह के समाधान के लिए फ्रायड ने मूलतः तीन प्रतिनिधियों का वर्णन किया है -  
उपाह (Id), अह (ego) तथा परह (Super ego)।

इन तीनों का वर्णन निम्नांकित है -

- (1) उपाह (Id) - उपाह व्यक्तित्व का जैविक तत्त्व है जिनमें उन प्रवृत्तियों का भरमार होता है जो जन्मजात होती हैं तथा जो असंगठित, कामुक, आक्रामकतापूर्ण तथा किसी नियम आदि को मानने वाली नहीं होती हैं। एक नवजात शिशु में मूलतः उपाह की प्रवृत्तियों का ही भरमार होता है। उपाह की प्रवृत्तियों "आनन्द सिद्धान्त" द्वारा निर्धारित होती हैं क्योंकि ऐसी प्रवृत्तियों का मुख्य उद्देश्य आनन्द देने वाले प्रेरणाओं की संतुष्टि करना होता है। इसे उचित-अनुचित, किवक-अकिवक, समय, स्थान आदि से कोई मतलब नहीं होता है। उपाह की प्रवृत्तियों का वास्तविकता से मतलब नहीं होता है क्योंकि वह अचेतन में होता है।

व्यक्तित्व में उत्पन्न तनावों एवं संघर्षों को दूर करने के लिए उपाह्व मूलतः दो तरह के प्रक्रम को अपनाता है - सहज प्रक्रिया तथा प्राथमिक प्रक्रिया। सहज प्रक्रिया में उपाह्व तनाव उत्पन्न करने वाले श्रोत के प्रति अपने आप अनुक्रिया कर तनाव को दूर करता है। खाँसना, हँकना, आँख मिचकाना आदि कुछ ऐसी ही सहज प्रक्रियाओं के उदाहरण हैं। प्राथमिक प्रक्रिया में व्यक्ति वैसे उद्दीपकों जिनमें पहले इच्छा की संतुष्टि होती थी, के बारे में मात्र शक कल्पना कर ~~अकल्प~~ अपने संघर्ष या तनाव दूर करता है। शक बच्चा जिससे वह खिलौना जिससे वह खेलता है नहीं के पर उस खिलौने का मात्र कल्पना कर ही अपनी इच्छा की पूर्ति करता है तथा मानसिक तनाव दूर करता है।

To be continued